

राज्यपाल ने डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित की
डॉ0 मुखर्जी ने सदैव राष्ट्रीय एकता की स्थापना को अपना प्रथम लक्ष्य रखा - श्री नाईक

लखनऊ: 23 जून, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के अवसर पर डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी चिकित्सालय (सिविल अस्पताल) प्रागण स्थित उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर प्रदेश की मंत्री श्रीमती रीता बहुगुणा जोशी, मंत्री श्री बृजेश पाठक, राज्यमंत्री श्रीमती स्वाती सिंह, राज्यमंत्री डॉ0 महेन्द्र सिंह, राज्यसभा सांसद श्री अशोक बाजपेई, विधायक श्री सुरेश श्रीवास्तव, महापौर डॉ0 संयुक्ता भाटिया सहित अन्य अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

राज्यपाल ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के प्रति यह श्रद्धांजलि होगी कि डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने देश के प्रति जो मिसाल प्रस्तुत की है उसी रास्ते पर हम सब मिलकर चलें। कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है। डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का मानना था कि 'एक देश में दो निशान, दो प्रधान और दो विधान' नहीं होना चाहिए। इस बात को लेकर डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सत्याग्रह भी किया था। डॉ0 मुखर्जी ने सदैव राष्ट्रीय एकता की स्थापना को अपना प्रथम लक्ष्य रखा। उन्होंने कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में उनके जैसा सिद्धांतवादी व्यक्तित्व युवा वर्ग के लिये प्रकाश स्तम्भ के समान है।

श्री नाईक ने कहा कि महात्मा गांधी के कहने पर आजादी के बाद प्रथम केन्द्रीय मंत्रिमण्डल में कोलकाता से डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी तथा महाराष्ट्र से बाबासाहेब आंबेडकर को स्थान दिया गया। कश्मीर को लेकर वैचारिक मतभेद होने के कारण उन्होंने मंत्रिमण्डल से त्याग पत्र दे दिया तथा भारतीय जनसंघ की स्थापना की। लोकसभा में जनसंघ के मात्र तीन सदस्य होने के बावजूद भी विपक्ष के लोगों ने एकजुट होकर डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी को नेता विपक्ष के रूप में मान्यता दी। उन्होंने कहा कि डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपने सिद्धांतों और विचारों से कभी समझौता नहीं किया।

राज्यपाल ने कहा कि डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जीवन प्रेरणामयी था। उनमें अद्भुत विद्वता थी तथा उनकी भाषा शैली की विशेषता थी कि बड़ी सहजता से वे अपनी बात दूसरों तक पहुँचा सकते थे। महज 33 वर्ष की आयु में वे कोलकाता विश्वविद्यालय के कुलपति बने थे, जो अपने आप में एक उदाहरण है। वे महान शिक्षाविद् चिंतक तथा भारतीय जनसंघ के स्थापक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि देश की स्वतंत्रता और संविधान की रक्षा के लिए डॉ0 मुखर्जी ने अपने जीवन का बलिदान दिया था।

अंजुम/ललित/राजभवन (250/27)



